I. उत्पादन

भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी से त्वरित गति से उबरने में सफल रही है। कृषि उत्पादन पर कम वर्षा की मार के बावजूद वर्ष 2009-10 के लिए जीडीपी में 7.2 प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान है, जो वर्ष 2008-09 के 6.7 प्रतिशत से अधिक है। यदि ठकृषिड तथा ठसामुदायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाओंड को छोड़ दें तो सुधार का दायरा व्यापक रहा है। हाल के महीनों में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) ने दो अंकों में वृद्धि दर्ज की है। सेवा संबंधी कार्यकलापों के लिए अग्रणी संकेतक वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही से व्यापक सुधार की ओर इशारा करते हैं। सर्वेक्षण के आंकड़े हाल की तिमाहियों में क्षमता उपयोग के स्तर में वृद्धि दिखाते हैं, तथापि, ये पहले के शीर्ष स्तर से नीचे बने हुए हैं।

I.1 वर्ष 2008-09 में वृद्धि में स्पष्ट रूप से 6.7 प्रतिशत की नरमी देखने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में वर्ष 2009-10 के दौरान 7.2 प्रतिशत की वृद्धि के साथ सुधार आया (केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) के अग्रिम अनुमानों के अनुसार)। अर्थव्यवस्था के आठ क्षेत्रों/उप-क्षेत्रों में से पाँच ने वर्ष 2009-10 के दौरान उच्चतर वृद्धि दर दर्ज की (चार्ट I.1)।

I.2 केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन ने हाल में राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के लिए आधार वर्ष को 1999-2000 के स्थान पर 2004-05 कर दिया है। अपस्फीतिकारक में संशोधन करने के अलावा नई शृंखला (आधार:2004-05) में अन्य सरकारी एजेंसियों के साथ मिलकर सीएसओ द्वारा किए गए विविध अध्ययनों एवं सर्वेक्षण के आंकड़ों का भी समावेश किया गया है। नई शृंखला का दायरा कार्यकलापों के अनुसार विस्तृत किया गया है। साथ ही, अनुमानन में कुछ प्रक्रियागत बदलाव किए गए हैं। पुरानी एवं नई शृंखलाओं में समग्र वार्षिक वृद्धि दरों में कोई प्रमुख अंतर नहीं है, सिवाय वर्ष 2007-08 के। तथापि, क्षेत्रवार स्तर पर वृद्धि दरों में एवं जीडीपी में हिस्से में अंतर है।

चार्ट I.1: उप-क्षेत्रों के अनुसार सकल देशी उत्पाद

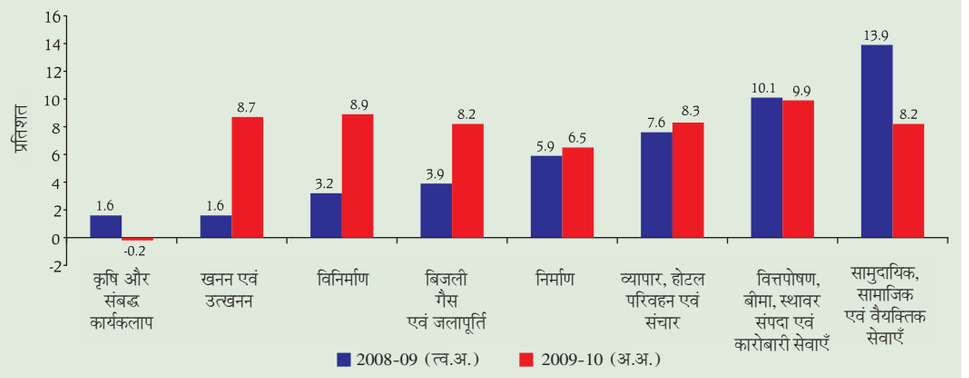

I.3 पिछले सूखाग्रस्त वर्षों के समान ही वर्ष 2009-10 में कृषि की समग्र वृद्धि में जबरदस्त कमी आने का अनुमान था। तथापि, रबी की फसल की अच्छी संभावनाओं एवं ठ संबद्ध क्षेत्र ठ की मजबूती के कारण वर्ष के लिए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र जीडीपी में कमी का आंकड़ा सीएसओ के अग्रिम अनुमान के अनुसार केवल (-)0.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

I.4 वर्ष 2009-10 में तिमाही आधार पर वृद्धि की प्रवृत्तियाँ दूसरी तिमाही में तगड़ा सुधार दिखाने के बाद

सारणी I.1: वास्तविक सकल देशी उत्पाद की वृद्धि दर @

(प्रतिशत)

क्षेत्र	2008-09*	2009-10#	2008-09			2009-10		
			ति 1	ति 2	ति 3	ति 1	ति 2	ति 3
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	**1.6** (15.7)	**-0.2** (14.6)	**3.2**	**2.4**	**-1.4**	**2.4**	**0.9**	**-2.8**
2. उद्योग	**3.1** (20.0)	**8.8** (20.3)	**5.2**	**4.9**	**1.7**	**4.2**	**9.1**	**12.8**
2.1 खनन एवं उत्खनन	1.6	8.7	2.6	1.6	2.8	7.9	9.5	9.6
2.2 विनिर्माण	3.2	8.9	5.9	5.5	1.3	3.4	9.2	14.3
2.3 बिजली, गैस और जलापूर्ति	3.9	8.2	3.3	4.3	4.0	6.2	7.4	4.9
3. सेवाएँ	**9.3** (64.4)	**8.5** (65.1)	**9.4**	**9.4**	**10.3**	**7.7**	**8.9**	**6.6**
3.1 व्यापार, रेस्तराँ, परिवहन, भंडारण और संचार	7.6	8.3	10.8	10.0	4.4	8.1	8.5	10.0
3.2 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएँ	10.1	9.9	9.1	8.5	10.2	8.1	7.7	7.8
3.3 सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएँ	13.9	8.2	8.7	10.4	28.7	6.8	12.7	-2.2
3.4 निर्माण	5.9	6.5	7.1	8.0	3.0	7.1	6.5	8.7
4. कारक लागत पर वास्तविक सकल देशी उत्पाद	**6.7** (100)	**7.2** (100)	**7.6**	**7.5**	**6.2**	**6.1**	**7.9**	**6.0**
ज्ञापन:								(राशि करोड़ रुपये में)
क. कारक लागत पर सकल देशी उत्पाद (आधार: 2004-05)	41,54,973	44,53,064						
ख. चालू बाजार कीमतों पर सकल देशी उत्पाद	55,74,449	61,64,178						

@ : 2004-05 की कीमतों पर * : त्वरित अनुमान # : संशोधित अनुमान

टिप्पणी : कोष्ठक के आँकड़े वास्तविक सकल देशी उत्पाद में हिस्सा दर्शाते हैं

स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन

चार्ट I.2: वृद्धि में क्षेत्रवार योगदान

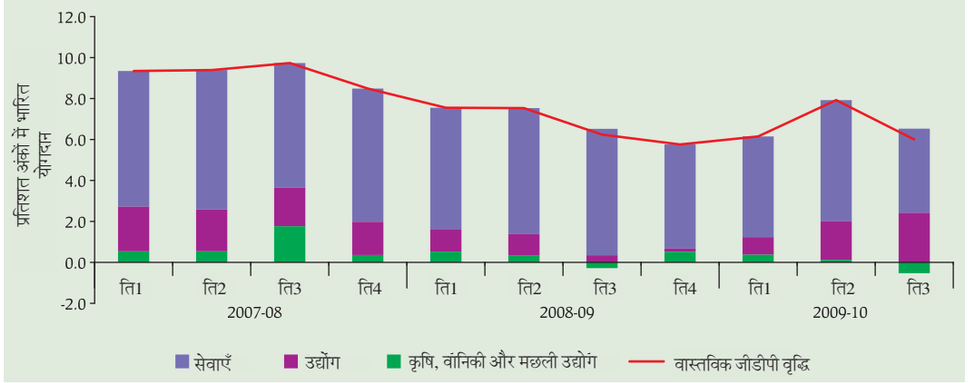

तीसरी तिमाही में इसमें कुछ कमी की ओर इशारा करती हैं (सारणी I.1 एवं चार्ट I.2)। वृद्धि में यह नरमी मुख्यतः दो कारकों का परिणाम थीः पहला, तीसरी तिमाही के आंकड़ों में कृषि उत्पादन पर कम वर्षा के प्रभाव का प्रतिफलन हुआ। दूसरा, वर्ष 2008-09 की तीसरी तिमाही में उच्च आधार का प्रभाव, जब 'सामुदायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाओं' में उच्चतर वृद्धि दर्ज की गयी, जो छठे वेतन आयोग के बकाया वेतन के संवितरण को प्रतिबिंबित करता है। यदि उपर्युक्त दोनों कारकों के प्रभाव को निकाल दिया जाये, तो हम देखेंगे कि तीसरी तिमाही में पहले की तिमाहियों के अनुरूप ही वृद्धि की गति बनी हुई है। औद्योगिक वृद्धि में तेजी दिसम्बर 2009 से विशेष रूप से तगड़ी हुई है।

कृषि की स्थिति

I.5 वर्ष 2009 के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून में वर्षा में 23 प्रतिशत की कमी रहने से कुछ राज्यों में सूखे की स्थिति पैदा हो गई। वर्ष 2009 के दौरान उत्तर-पूर्वी मानसून संतोषजनक रहा, जब कुल वर्षा सामान्य से 8 प्रतिशत अधिक दर्ज की गई, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान वर्षा सामान्य से 31 प्रतिशत कम हुई थी। दक्षिण-पश्चिमी मानसून के सामान्य अवधि के बाद तक रहने, उत्तर-पूर्वी मानसून के सामान्य से अधिक रहने एवं रबी उत्पादन को बढ़ाने के सरकार के दृढ़ प्रयासों के कारण रबी उत्पादन पर सकारात्मक असर होगा जिससे खरीफ उत्पादन में हुई कमी के असर को आंशिक रूप से समंजित किया जा सकेगा।

I.6 वर्ष 2008-09 में खाद्यान्नों के 234.5 मिलियन टन के रिकार्ड उत्पादन से उत्साहित होकर कृषि मंत्रालय ने वर्ष 2009-10 के लिए खाद्यान्न उत्पादन का उच्चतर लक्ष्य निर्धारित किया था (सारणी I.2)। वर्ष 2009-10 के लिए द्वितीय अग्रिम अनुमान के अनुसार कुल खाद्यान्न उत्पादन में पिछले वर्ष से 7.5 प्रतिशत तक गिरावट होने की संभावना है। जबकि खरीफ खाद्यान्नों और तिलहन के उत्पादन में 14.6 प्रतिशत तक की गिरावट आयेगी, रबी के उत्पादन में 0.7 प्रतिशत की सीमांतिक वृद्धि होने की संभावना है।

खाद्य प्रबंधन

I.7 उत्पादन में भले ही कमी हो, खाद्यान्नों (चावल और गेहूँ) की सरकारी खरीद वर्ष 2009-10 के दौरान (15 मार्च 2010 तक) पिछले वर्ष की तुलना में अधिक हुई (सारणी I.3)। खाद्यान्नों का कुल भंडार, जो 1 जून, 2009 को 54.8 मिलियन टन था, वह 1 मार्च 2010 को कम हो कर

सारणी I.2 : कृषि उत्पादन

(मिलियन टन)

फसल	2007-08	2008-09	2009-10	
			लक्ष्य	उपलब्धि@
1	2	3	4	5
धान	96.7	99.2	100.5	87.6
खरीफ	82.7	84.9	86.0	72.9
रबी	14.0	14.3	14.5	14.7
गेहूँ	78.6	80.7	79.0	80.3
मोटा अनाज	40.8	40.0	43.1	34.3
खरीफ	31.9	28.5	32.7	22.8
रबी	8.9	11.5	10.5	11.5
दालें	14.8	14.6	16.5	14.7
खरीफ	6.4	4.7	6.5	4.2
रबी	8.4	9.9	10.0	10.5
कुल खाद्यान्न	**230.8**	**234.5**	**239.1**	**216.9**
खरीफ	121.0	118.1	125.2	99.9
रबी	109.8	116.3	114.0	117.0
कुल तिलहन	29.8	27.7	31.6	26.3
खरीफ	20.7	17.8	19.4	16.2
रबी	9.0	9.9	12.2	10.1
गन्ना	348.2	285.0	340.0	251.3
कपास #	25.9	22.3	26.0	22.3
जूट और मेस्ता ##	11.2	10.4	11.2	10.4

@ : वर्ष 2009-10 के लिए द्वितीय अग्रिम अनुमान
# : प्रत्येक 170 कि.ग्रा. की मिलियन गांठ ।
: प्रत्येक 180 कि.ग्रा. की मिलियन गांठ ।
स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

45.8 मिलियन टन रह गया, जिसका कारण खाद्यान्नों का अधिक उठाव किया जाना था। खाद्यान्नों के भंडार में कमी होने पर भी चावल और गेहूँ के भंडार उनके अपने-अपने सुरक्षित भंडार के मानदंडों से काफी ऊपर बने रहे हैं।

I.8 जबकि वर्ष 2009-10 की पहली छमाही के दौरान खाद्यान्नों का उठाव मुख्यतः लक्ष्यित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टीडीपीएस) के माध्यम से किया गया, दूसरी छमाही में सरकार ने 3 मिलियन टन गेहूँ और 1 मिलियन टन चावल खुले बाजार में बिक्री के लिए आबंटित किया, ताकि खाद्य-वस्तुओं की बढ़ती कीमतों को रोका जा सके। जनवरी-फरवरी 2010 की अवधि के लिए टीडीपीएस के अंतर्गत 1.1 मिलियन टन चावल और 2.5 मिलियन टन गेहूँ का अतिरिक्त तदर्थ आबंटन इन वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ाने के लिए किया गया।

औद्योगिक कार्यनिष्पादन

I.9 औद्योगिक उत्पादन, जो वर्ष 2007-08 में चक्रीय मंदी तथा अंतरराष्ट्रीय पण्य-कीमत आघातों से और वर्ष 2008-09 में वैश्विक मंदी से प्रभावित हुआ था, वह वर्ष 2009-10 में मंदी के दौर से काफी उबर गया। औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) में अक्तूबर 2009-फरवरी

सारणी I.3: खाद्यान्न भंडार का प्रबंधन

(मिलियन टन)

माह/वर्ष	खाद्यान्नों का आरंभिक स्टॉक			खाद्यान्नों की खरीद			खाद्यान्नों का उठाव					मानदंड
	चावल	गेहूँ	कुल	चावल	गेहूँ	कुल	पीडीएस	ओडब्लूएस	ओएमएस - देशी	निर्यात	कुल	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
2008-09	13.8	5.8	19.8	32.8	22.7	55.5	34.9	3.4	1.2	0.0	39.5	
2008-09@	13.8	5.8	19.8	31.2	22.7	53.9	23.0	2.0	0.1	0.0	25.1	
2009-10@	21.6	13.4	35.6	31.3	25.4	56.7	28.8	2.5	0.2	0.0	31.4	
ज्ञापन												
जनवरी 2010	24.4	23.1	47.7	4.4	0.0	4.4	–	–	–	–	–	20.0
फरवरी 2010	25.7	20.6	46.5	3.3	0.0	3.3	–	–	–	–	–	
मार्च 2010	27.0	18.4	45.8	1.1	0.0	1.1	–	–	–	–	–	
अप्रैल 2010*	–	–	–	0.4	4.4	4.8	–	–	–	–	–	16.2

पीडीएस :सार्वजनिक वितरण प्रणाली ओडब्लूएस : अन्य कल्याणकारी योजनाएँ ओएमएस : खुला बाजार विक्रय.
- : अनुपलब्ध @: मार्च 15 तक सरकारी खरीद, 30 नवंबर तक उठाव * : 12 अप्रैल तक सरकारी खरीद
टिप्पणी : स्टॉक में मोटा अनाज भी शामिल होने के कारण अंतिम स्टॉक के आंकड़े उन आंकड़ों से भिन्न हो सकते हैं जो प्रारंभिक स्टॉक और खरीद को जोड़कर तथा उठाव को घटाने पर आते हैं।
स्रोत : उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार

चार्ट I.3: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

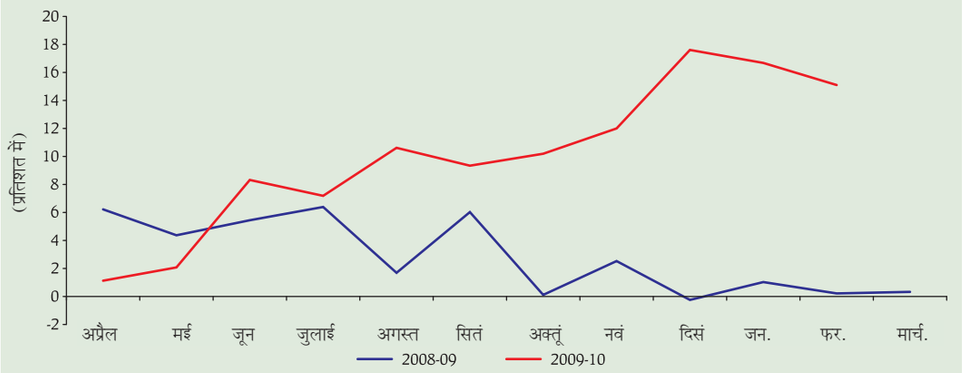

2010 के दौरान द्विअंकीय वृद्धि दर्ज की गयी (चार्ट I.3 और सारणी I.4क)। औद्योगिक वृद्धि विनिर्माण क्षेत्र से प्रेरित थी, जिसका भारित अंशदान 88.8 प्रतिशत था, जबकि आइआइपी में विनिर्माण क्षेत्र की भारिता 79.4 प्रतिशत थी।

I.10 आइआइपी में सम्मिलित 17 उद्योगों में से 13 उद्योगों ने, जो भारिता के 59.9 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार थे, पिछले वर्ष की तुलना में उच्चतर वृद्धि दर्ज की। शीर्षस्थ पाँच विनिर्माण उद्योगों ने, जिनकी आइआइपी में संयुक्त भारिता 36.1 प्रतिशत थी, अप्रैल-फरवरी 2009-10 के दौरान लगभग 80.7 प्रतिशत वृद्धि में योगदान किया, जबकि वर्ष 2008-09 की तदनुकूल अवधि में इनका योगदान 122.2 प्रतिशत और वर्ष 2007-08 में 34 प्रतिशत रहा था। इससे ज्ञात होता है कि यद्यपि पिछले वर्ष की तुलना में उद्योगों में उत्पादन में सुधार का आधार अधिक व्यापक रहा है, फिर भी उसमें और सुधार की गुंजाइश है (चार्ट I.4ख)।

सारणी I.4: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक : उद्योगों का क्षेत्रवार और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर			भारित अंशदान #		
		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-फरवरी		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-फरवरी	
			2008-09	2009-10 अ		2008-09	2009-10 अ
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्रवार							
खनन	10.5	2.6	2.6	9.7	6.3	5.9	6.4
विनिर्माण	79.4	2.7	3.1	10.5	85.3	87.2	88.8
बिजली	10.2	2.8	2.4	5.8	8.3	6.7	4.8
उपयोग-आधारित							
मूल वस्तुएं	35.6	2.6	2.7	6.7	28.4	26.7	19.8
पूंजीगत वस्तुएं	9.3	7.3	9.2	18.2	34.1	38.2	23.8
मध्यवर्ती वस्तुएं	26.5	-1.9	-2.3	13.7	-18.4	-20.2	34.0
उपभोक्ता वस्तुएं (क+ख)	28.7	4.7	5.1	7.1	54.2	53.4	22.5
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	5.4	4.5	4.1	25.5	12.4	10.4	19.4
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	23.3	4.8	5.4	1.3	41.7	43.0	3.1
सामान्य	**100.0**	**2.7**	**3.0**	**10.1**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

अ : अनंतिम।
: पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि आंकड़ों का योग 100 न हो।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन

चार्ट I.4: विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि का संकेंद्रण

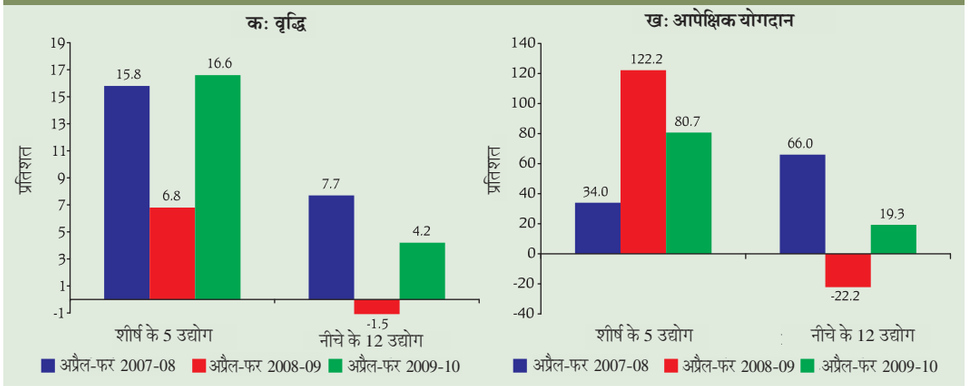

I.11 उद्योगों का उपयोग आधारित वर्गीकरण यह दर्शाता है कि पूँजीगत वस्तुओं में सितंबर 2009 से और मध्यवर्ती वस्तुओं में अगस्त 2009 से द्विअंकीय वृद्धि दर्ज की गयी है, जो अनेक अनुप्रवाही उद्योगों में वृद्धि की गति का समर्थन करेगी। टिकाऊ वस्तुओं का उत्पादन, जो वर्ष 2009-10 के आरंभ से द्विअंकीय वृद्धि के प्रक्षेप-पथ पर बना रहा था, नवंबर 2009 और फरवरी 2010 के बीच और तेज हुआ। मूलभूत वस्तुओं का उत्पादन वर्ष 2009-10 के दौरान अपेक्षाकृत नरम रहा, जिसमें बीच-बीच में तेजी दिखती रही। 'परिवहन उपकरण और पुर्जे', 'परिवहन उपकरण से भिन्न मशीन और उपकरण' और 'मशीन एवं उपकरण को छोड़ कर धातु उत्पाद और पुर्जे' जैसे उद्योग खंडों में दिसंबर 2009-फरवरी 2010 के दौरान 36-59 प्रतिशत की सीमा तक वृद्धि-दर दर्ज की गयी। पिछले कुछ महीनों के दौरान 'परिवहन उपकरण एवं पुर्जे' के उत्पादन में वृद्धि की पुष्टि ऑटोमोबाइल के उत्पादन में देखे गये तगड़े कार्यसंपादन से होती है। समग्र ऑटोमोबाइल उत्पादन में अप्रैल-फरवरी 2009-10 के दौरान लगभग 24 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और कुल उत्पादन में निर्यात का हिस्सा लगभग 13 प्रतिशत[1] था। उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं के खंड में गिरावट की प्रवृत्ति बनी रही, हालाँकि इसमें फरवरी 2010 में कुछ सुधार दिखाई पड़ा। इस खंड में आपेक्षिक दुर्बलता का कारण खाद्य-उत्पादों, पेय पदार्थ और तम्बाकू के उत्पादों तथा जूट एवं अन्य वानस्पतिक फाइबर वस्त्र (कपास को छोड़ कर) में उत्पादन संकुचन को माना जा सकता है। समग्र उपभोक्ता वस्तु उत्पादन में इसकी यथेष्ट भारिता को देखते हुए उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं के खंड के दुर्बल कार्यसंपादन ने उत्पादन में पुनःप्राप्ति को अवमंदित किया है।

I.12 अप्रैल-जनवरी 2009-10 की अवधि के दौरान आधारिकी क्षेत्र में क्षमता-उपयोग में मिली-जुली प्रवृत्ति देखी गयी, जिसमें तैयार उत्पाद और उर्वरक के क्षेत्र में पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में अधिक उपयोग दर्ज किया गया, जबकि सीमेंट तथा पेट्रोलियम उत्पादों के रिफाइनरी उत्पादन में इसी अवधि में कम उपयोग होता देखा गया (सारणी I.5)।

I.13 रिज़र्व बैंक का आदेश पुस्तिका, इन्वेंटरी एवं क्षमता उपयोग सर्वेक्षण इंगित करता है कि यद्यपि क्षमता उपयोग में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही से सुधार दिखाई देता रहा है, फिर भी यह वैश्विक संकट के पूर्व की अवधि के दौरान देखे गये सर्वोच्च स्तर से कम ही है।

[1] स्रोत : सोसाइटी फॉर इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (एसआइएएम)

सारणी I.5 : आधारभूत संरचना क्षेत्र में क्षमता उपयोग

(प्रतिशत)

क्षेत्र	2008-09 (अप्रैल -जनवरी)	2009-10 (अप्रैल -जनवरी)
1	2	3
तैयार इस्पात (सेल + वीएसपी + टाटा स्टील)	86.3	89.8
सीमेंट	85.0	83.0
उर्वरक	84.8	95.6
पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पादन	107.3	106.7

स्रोत : आधारभूत संरचना क्षेत्र के कार्यसंपादन के संबंध में कैप्सूल रिपोर्ट(अप्रैल 2009-जनवरी 2010), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार

रिज़र्व बैंक के औद्योगिक उत्पादन सर्वेक्षण में भी इसी प्रकार का पैटर्न दिखाई पड़ता है (चार्ट I.5)।

आधारभूत संरचना क्षेत्र

I.14 प्रमुख आधारभूत संरचना क्षेत्र के कार्यसंपादन में, जिसमें नवंबर 2009 से जनवरी 2010 के दौरान महत्वपूर्ण रूप से सुधार हुआ था, फरवरी 2010 में गिरावट आयी चार्ट I.6क)। फरवरी 2010 के दौरान आधारभूत संरचना क्षेत्र की वृद्धि में मंदी (जनवरी 2010 के 9.4 प्रतिशत की तुलना में 4.5 प्रतिशत), जिसकी अगुआई सीमेंट और इस्पात ने की थी, का कारण अंशतः इन्वेंटरियों का समायोजन करना हो सकता है। विद्युत के क्षेत्र में तेज वृद्धि की अगुआई विनिर्माण क्षेत्र के तगड़े कार्यसंपादन ने की, जबकि फरवरी 2010 तक सीमेंट और इस्पात के उत्पादन में वृद्धि का कारण निर्माण संबंधी कार्यकलापों में वृद्धि को माना जा सकता है। कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों का उत्पादन वर्ष के दौरान अब तक कम हुआ है (चार्ट I.6ख)। पेट्रोलियम उत्पादों में अगस्त 2009 से कुछ तेजी आयी, जबकि कच्चे तेल के उत्पादन में दिसंबर 2009 से कुछ सुधार हुआ है। प्राकृतिक गैस का उत्पादन, जो प्रमुख आधारभूत संरचना क्षेत्र सूचकांक में शामिल नहीं किया गया है, वर्ष 2009-10 के दौरान तेज गति से बढ़ा, जिसका कारण था कृष्णा-गोदावरी (केजी) बेसिन के डी6 खंड में एवं राजस्थान फील्ड्स (केयर्न) में उत्पादन का प्रारंभ होना। प्राकृतिक गैस का उत्पादन अप्रैल-जनवरी 2009-2010 में लगभग 40 प्रतिशत बढ़ा, जिसमें उच्च वृद्धि अंतिम कुछ महीनों के दौरान दर्ज की गयी (नवंबर 2009-जनवरी 2010 के दौरान औसतन 61 प्रतिशत)।

चार्ट I.5: क्षमता उपयोग

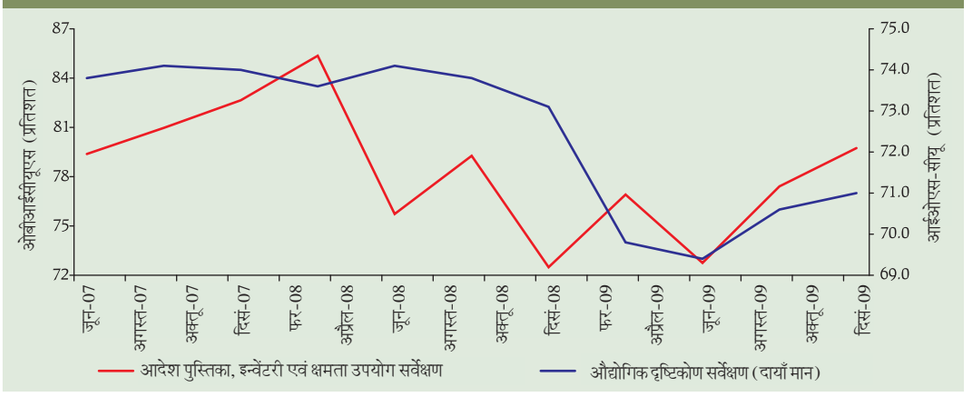

चार्ट I.6: संरचनात्मक उद्योगों में वृद्धि

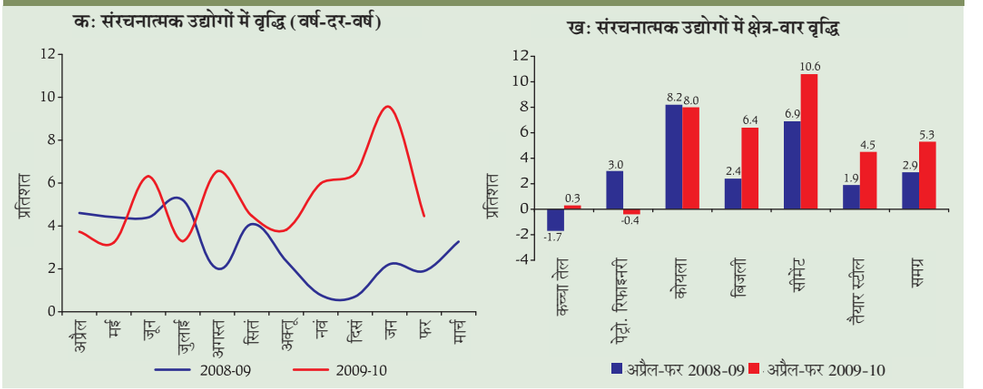

सेवा क्षेत्र

I.15 सेवा-क्षेत्र में वृद्धि में वर्ष 2009-10 की दूसरी तिमाही में महत्वपूर्ण सुधार दिखाई पड़ने के बाद, उसमें तीसरी तिमाही में 6.6 प्रतिशत की गिरावट आयी (चार्ट I.7)। 'सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाओं' के क्षेत्र की वृद्धि में गिरावट ने वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही के दौरान वृद्धि की गति को संकुचित किया। तथापि, उप-समूहों, यथा, 'निर्माण' एवं 'व्यापार, हॉटेल, परिवहन और संचार' के क्षेत्र के उत्पादन में वृद्धि की गति तेज हुई।

I.16 सेवा-क्षेत्र के अग्रणी संकेतक यह बताते हैं कि इसमें वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के कार्यसंपादन की तुलना में तीसरी तिमाही से समग्र सुधार हुआ है। बाह्य मांग पर आश्रित सेवाएँ, यथा, पर्यटकों का आगमन, समुद्री बंदरगाहों और विमान पत्तनों में संचालित कार्गो तथा अंतरराष्ट्रीय टर्मिनलों में संचालित पैसेंजर, वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही के दौरान महत्वपूर्ण रूप से सुधरीं, जो बाह्य वातावरण में सुधार को प्रतिबिंबित करती है। घरेलू मांग से प्रेरित सेवाओं में भी वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही

चार्ट I.7: सेवा-क्षेत्र में तिमाही वृद्धि की प्रवृत्ति

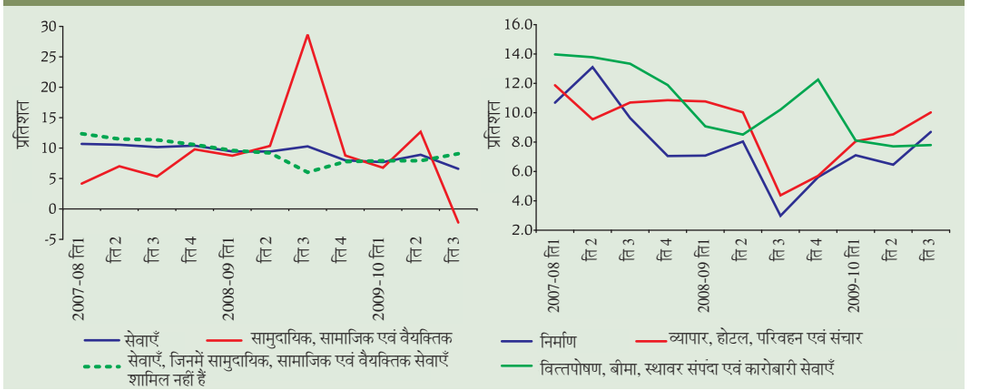

सारणी 1.6: सेवा क्षेत्र गतिविधि के संकेतक

(वृद्धि प्रतिशत में)

			2009-10				अप्रैल-फरवरी	
	2007-08	2008-09	ति1	ति2	ति3	ति4	2008-09	2009-10
1	2	3	4	5	6	7	8	9
पर्यटकों का आगमन *	12.2	-3.3	-1.7	-4.0	6.5	13.2	-3.3	3.5
वाणिज्यिक वाहनों का उत्पादन	4.8	-24.0	-18.5	5.2	127.3	152.6	-23.4	58.9
सीमेंट ##	8.1	7.2	12.1	12.6	8.5	9.7	6.9	10.6
इस्पात ##	6.2	1.6	1.7	1.7	7.8	8.6	1.9	4.5
मालभाड़े से रेलवे को राजस्व	9.0	4.9	5.1	8.0	10.4	3.4	5.0	8.8
सेलफोन कनेक्शन#	38.3	44.8	59.4	52.4	69.1	29.2	73.7	51.4
मुख्य बंदरगाहों में कार्गो प्रबंध#	12.0	2.1	2.1	3.0	10.7	13.2	3.0	6.0
नागरिक उड्डयन								
निर्यात कार्गो प्रबंध#	7.5	3.4	0.5	1.9	21.0	17.4	5.0	8.2
आयात कार्गो प्रबंध#	19.7	-5.7	-12.7	-4.9	18.9	49.7	-3.5	2.8
अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध#	11.9	3.8	0.1	3.7	7.6	9.8	5.3	4.5
देशी टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध#	20.6	-12.1	-6.5	22.2	30.7	20.6	-12.0	14.3

* : आँकड़े पूरे वर्ष के हैं।
\# : जनवरी 2010 तक के आँकड़े।
: निर्माण से संबंधित प्रमुख संकेतक तथा फरवरी तक।
स्रोत : पर्यटन मंत्रालय; वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय; सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय; तथा भारतीय रिज़र्व बैंक

में तगड़ा कार्यसंपादन देखा गया, खास कर उन सेवाओं में, जिनका जुड़ाव विनिर्माण क्षेत्र के साथ है। वाणिज्यिक वाहन उत्पादन, जो परिवहन सेवाओं के लिए अग्रणी संकेतक है, वर्ष 2009-10 की तीसरी तिमाही में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा (सारणी I -6)।

I.17 समाहार करते हुए यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2009-10 में जीडीपी में वृद्धि पिछले वर्ष की तुलना में अधिक हुई, भले ही कृषि के उत्पादन पर दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा कम होने का प्रतिकूल प्रभाव हुआ था। आगे बढ़ते हुए, वृद्धि के संबंध में कुछ राजकोषीय उद्दीपक उपायों के अल्पावधि अनुकूल प्रभाव अनुपस्थित रहेंगे, जिनकी क्षतिपूर्ति निजी मांग में टिकाऊ वृद्धि द्वारा की जानी होगी, ताकि सुधार को बनाये रखा जा सके। औद्योगिक वृद्धि में पहले से ही निरंतर तेजी दिखाई पड़ती रही है और रबी फसलों के बेहतर उत्पादन की संभावना से समग्र सुधार की गति और तेज होगी। सेवा-क्षेत्र कार्यकलापों के अग्रणी संकेतक इस क्षेत्र में ठोस सुधार की ओर इंगित करते हैं।